1

मैक्स वेबर
(MAX WEBER)

मैक्स वेबर एक सुप्रसिद्ध इतिहासकार, राजनीतिक-अर्थशास्त्री एवं समाजशास्त्री थे जिन्होंने जर्मनी में समाजशास्त्र विषय को विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सामाजिक विचारधारा को उनकी अद्वितीय देन रही है क्योंकि उन्होंने समाजशास्त्र को सामाजिक क्रिया का अध्ययन करने वाला विस्तृत विज्ञान बताया है तथा अपने विश्लेषण में क्रियाओं के कर्ताओं पर अधिक ध्यान देकर अन्य समाजशास्त्रियों से भिन्न दृष्टिकोण अपनाया है। उनके सभी अध्ययन गहन चिन्तन, कुशाग्र बुद्धि एवं मौलिक विचारों पर आधारित हैं जिसके कारण वे इस विषय को प्रभावित करने वाले सबसे प्रमुख विद्वान् माने जाते हैं। उनके बाद आने वाली पीढ़ी इनके विचारों से प्रेरित और प्रभावित रही है। उन्होंने सामाजिक क्रिया, धर्म की आचार संहिता, पूँजीवाद की आत्मा, वैधता के स्रोत, शक्ति और सत्ता के प्रतिमान तथा नौकरशाही आदि ऐसी अवधारणाओं का निर्माण किया जो आज भी समाजशास्त्रीय अध्ययन और विश्लेषण में प्रयोग की जाती हैं। पद्धतिशास्त्र की दृष्टि से भी उनका योगदान स्थायी महत्त्व का है। उनके द्वारा प्रतिपादित समाजशास्त्रीय अवधारणाओं, समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों एवं अन्य योगदान को समझने से पहले यह उचित होगा कि हम मैक्स वेबर के जीवन-वृत्त और प्रमुख रचनाओं का संक्षिप्त परिचय प्राप्त कर लें।

वेबर का जीवन-चित्रण

महान् विचारक मैक्स वेबर का जन्म 21 अप्रैल, 1864 ई० को इरफूर्ट थूरिगिया नामक स्थान पर एक धनाढ्य परिवार में हुआ तथा वे अपने सब भाई-बहनों में सबसे बड़े थे। उनके बाबा बिलिफैल्ड (Bielifeld) में कपड़े के एक प्रमुख व्यापारी थे जिन्हें कैथोलिक सेल्जवर्ग से प्रोटेस्टैण्ट विचार रखने के कारण निकाल दिया गया था। उनके एक लड़के ने व्यापार की देख-रेख की जबकि दूसरे लड़के, वेबर के पिता, ने कुछ समय के लिए बर्लिन की नगर-सरकार में कार्य किया तथा बाद में इरफूर्ट में एक न्यायाधीश के रूप में कार्य किया और इसी स्थान पर वेबर का जन्म हुआ। वेबर के पिता एक सम्पन्न वकील और **विस्मार्क** के समय में जर्मनी की संसद में राष्ट्रीय-उदारदलीय सदस्य थे। बाद में उन्होंने राजधानी में राजनीतिक जीवन में सक्रिय हिस्सा लेना शुरू कर दिया। बर्लिन में वह पहले 'प्रसीयन हाउस ऑफ डिप्टिज' तथा 'जर्मन रिजस्टैग' के सदस्य रहे। इसके बाद वे 'नेशनल लिबरल पार्टी' के प्रमुख सदस्य बने।

वेबर की माता **हेलन फालनस्टेन** (Helene Fallenstein) भी वेबर के पिता जैसी सामाजिक पृष्ठभूमि वाले परिवार से आई थी। वेबर की माँ पवित्र विचारों की एक सुसंस्कृत महिला थी जिसके मानवीय और धार्मिक दृष्टिकोण अपने पति से मेल नहीं खाते थे। वह प्रोटेस्टैण्ट धर्मावलम्बी थी। उसके पितृ परिवार के सदस्य अधिकांशत: शिक्षक या मध्यम श्रेणी के सरकारी पदाधिकारी थे। इस प्रकार, वेबर का पालन-पोषण एक सभ्य एवं सम्पन्न परिवार में हुआ जहाँ केवल प्रमुख राजनीतिज्ञ ही नहीं अपितु अन्य प्रमुख विद्वान् भी मेहमानों के रूप में अक्सर आते-जाते थे। इन सुविधाओं के फलस्वरूप वेबर को अर्थशास्त्र एवं कानून के क्षेत्र में समुचित प्रशिक्षण ही नहीं मिला अपितु प्रमुख राजनीतिज्ञों और विद्वानों के सम्पर्क में आने के कारण वेबर में असाधारण जिज्ञासा की प्रवृत्ति भी उत्पन्न हो गई। वेबर को **ट्रैटषक** (Treitschke), **साइबल** (Syble), **डिल्थे** (Dilthey) तथा **मामसेन** (Mommsen) जैसे प्रमुख इतिहासकारों से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। परिवार के प्रांगण में ही सक्रिय राजनीति और विद्वत्ता-भरे वातावरण ने बचपन से ही होनहार बालक वेबर में अद्‌भुत प्रतिभा का विकास किया। शैशवकाल के इस वातावरण में यदि कोई अवांछनीय प्रभाव था तो वह उनके माता-पिता के बीच तनावपूर्ण वैवाहिक जीवन था। दोनों की धार्मिक प्रवृत्तियों और मानवतावादी दृष्टिकोण में अन्तर था। धीरे-धीरे वेबर के पिता अपनी पत्नी के प्रति उदासीन होने लगे थे और सक्रिय राजनीति में डूबने लगे थे। बच्चों से यह घर का तनावपूर्ण वातावरण छिपा नहीं था। वेबर के लिए उनके पिता एक आदर्श पुरुष थे, परन्तु उनका माँ के प्रति व्यवहार वेबर को पसन्द नहीं था। बालक वेबर के मन में एक अनजाना अन्तर्द्वन्द्व छिड़ने लगा था।

परिवार के बौद्धिक मित्रों तथा परिवार द्वारा अत्यधिक यात्राओं के कारण युवा वेबर स्कूल के सामान्य निर्देशों से असन्तुष्ट हो गए। वे शारीरिक दृष्टि से कमजोर थे। परन्तु शैशव अवस्था में उन्होंने काफी अध्ययन किया तथा अपनी बौद्धिक क्षमता का परिचय दिया। केवल 13 वर्ष की आयु में उन्होंने ऐतिहासिक लेख लिखने शुरू कर दिए तथा 15 वर्ष की आयु से वे एक होनहार विद्यार्थी के रूप में उभरने लगे तथा अनेक बार अपने

सहपाठियों की रुचियों तथा **स्कोट** (Scott) के ऐतिहासिक नोवल जैसी शास्त्रीय सामग्री न पढ़ने के कारण उनकी आलोचना किया करते थे। वे अपने अधिकांश अध्यापकों का भी इसलिए अधिक सम्मान नहीं कर पाते थे तथा परीक्षा के समय अपने सहपाठियों की काफी सहायता किया करते थे। चौदह वर्ष की आयु में लिखे गए पत्रों में वे होमर (Homor), **वीरगिल** (Virgil), **सिसरो** (Cicero) तथा **लिवी** (Livy) जैसे विद्वानों का उल्लेख किया करते थे। विश्वविद्यालय में प्रवेश से पहले ही उन्हें **स्पीनोजा** (Spinoza) और **कान्त** (Kant) के विचारों का काफी ज्ञान हो चुका था।

वेबर के परिवार में पिता का निरंकुश शासन था तथा उनकी माता ने उनको अपनी ओर आकर्षित करके ईसाई दया के गुण विकसित करने के प्रयास किए, परन्तु वेबर अपनी युवावस्था में माता से अधिक अपने पिता के नजदीक था। जब वह 'हाइडेलबर्ग विश्वविद्यालय' (University of Heidelberg) में 18 वर्ष की आयु में शिक्षा प्राप्त करने लगे तो उन्होंने अपने पिता की रुचि के विषय—कानून—को अपने प्रमुख अध्ययन के लिए चुना। यहाँ पर इन्होंने अनेक सांस्कृतिक विषयों; जैसे इतिहास, अर्थशास्त्र तथा दर्शनशास्त्र का भी अध्ययन किया जिन्हें 'हाइडेलबर्ग विश्वविद्यालय' में उच्च कोटि के विद्वान् पढ़ाते थे। इसी विश्वविद्यालय में इन्होंने तर्कशास्त्र का भी अध्ययन किया। छात्र जीवन में देशभक्ति के गीत, जो इन्होंने इस विश्वविद्यालय में अध्ययन काल में सीखे, इनके जीवन में सदा के लिए समा गए। 18 वर्ष की आयु में 'हाइडेलबर्ग विश्वविद्यालय' में उन्होंने अन्य जर्मन लड़कों की तरह द्वन्द्व (तलवारबाजी) के तरीकों, शराब पीने की होड़ों और खाने-पीने व मौज उड़ाने की रोमान्सवादी जीवन शैली को भी अपना लिया। वे दिखावट पसन्द और पुरुषत्व-प्रधान बन गए। दिखावटीपन और मर्दानगी प्रदर्शन इतना बढ़ गया कि वे विश्वविद्यालय से अपने घर गए तो रोष में उनकी माँ ने उनके मुँह पर तमाचा लगा दिया। माँ का यह तमाचा सदैव उन्हें व्यावहारिक जीवन में आगे बढ़ने से रोकता रहा। उनका जीवन आदर्श और व्यवहार के अन्तर्द्वन्द्व से पीड़ित रहा। हाइडेलबर्ग में तीन सत्रों के अध्ययन के बाद वेबर 19 वर्ष की आयु में स्ट्रासबर्ग चले गए जहाँ उन्होंने एक वर्ष सैनिक जीवन का प्रशिक्षण लिया। 1884 ई० में एक वर्ष का सैनिक जीवन समाप्त करने के पश्चात् 21 वर्ष की आयु में वेबर ने बार्लिन तथा गोटिंगन में अपना विश्वविद्यालय का अध्ययन पुन: प्रारम्भ कर दिया तथा दो वर्ष बाद कानून की प्रथम परीक्षा पास की, परन्तु 1885 ई० की गर्मियों तथा फिर 1887 ई० में वह स्ट्रासबर्ग पुन: सैनिक अभ्यास के लिए थोड़ी अवधियों के लिए गए तथा 1888 ई० में इन्होंने पोसन के सैनिक अभियान में भाग लिया। वेबर की माता की दो बहिनें स्ट्रासबर्ग के प्रोफेसरों से विवाहित थीं तथा इनके परिवारों से इनको काफी बौद्धिक ज्ञान और भावात्मक अनुभव हुआ।

वेबर ने शिक्षा समाप्त करने के बाद बर्लिन के न्यायालय में नौकरी करनी शुरू कर दी। वहाँ पर वे अपने माता-पिता के साथ ही रहते थे। वेबर ने अपने शोध कार्य के लिए एक ऐसा विषय चुना जिसमें अर्थशास्त्र तथा वैधानिक इतिहास एक-दूसरे में समा जाते हैं तथा इनकी डाक्ट्रेट थीसिस मध्यकालीन व्यापारिक संगठनों से सम्बन्धित है जिसमें इन्होंने इटली तथा स्पेन के उदाहरण दिए तथा इन दोनों देशों की भाषा भी सीखी। उनके शोध प्रबन्ध का शीर्षक 'मध्ययुगीन व्यापारिक संगठनों की इतिहास के लिए एक देन' था। 1892 ई० में मैक्स वेबर के पिता की बड़ी भानजी 21 वर्षीय **मेरियन श्निटजर** (Marianne Schnnitger) जब बर्लिन में उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए आई तो उसे वेबर से प्यार हो गया और 1893 ई० में दोनों का विवाह हो गया। विवाह के पश्चात् वे बर्लिन में एक सफल विद्वान् के रूप में रहने लगे।

प्रारम्भ में वेबर को 'बर्लिन विश्वविद्यालय' में कानून के शिक्षक के रूप में काम मिल गया तथा कुछ समय के लिए वे अर्थशास्त्र के प्रमुख अध्यापक **जैकब गोल्डश्मिट** (Jakob Goldschmidt) के स्थान पर अर्थशास्त्र के अध्यापक के रूप भी नियुक्त हुए। 1894 ई० में इनको 'फ्रेबर्ग विश्वविद्यालय' (Freiburg University) में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर के रूप में नियुक्त किया गया। 1895 ई० में वेबर स्काटलैण्ड तथा आयरलैण्ड भी गए और 1896 ई० में इनको 'हाइडेलबर्ग विश्वविद्यालय' में अर्थशास्त्र के एक महत्त्वपूर्ण पद पर नियुक्त किया गया।

1897 ई० में वेबर के पिता का देहान्त हो गया तथा इसी वर्ष गर्मियों में उन्होंने स्पेन की यात्रा की परन्तु वापसी यात्रा में वे बीमार हो गए। इसके बाद अपने सम्पूर्ण जीवन में वेबर अत्यधिक बौद्धिक कार्य तथा यात्रा के कारण शक्तिहीनता का अनुभव करते रहे। वस्तुत: वेबर के 33 वर्ष की अवस्था में बीमार पड़ने का कारण अत्यधिक कार्य व थकावट था। वे मानसिक रोग से ग्रस्त थे। घोर चिन्ता उन्हें सताती रहती थी। चार वर्ष तक वे इसी पीड़ा से पीड़ित रहे। ऊपर से मजबूत दीखने वाला व्यक्ति वेबर घण्टों खिड़की के सहारे बैठा अन्तरिक्ष

निहारता रहता था। लगभग चार वर्ष बाद ऐसा लगा कि वेबर ठीक हो रहे हैं। उन्होंने अध्ययन का अभ्यास पुन: प्रारम्भ किया। परन्तु पुन: उन्हें अस्वस्थता ने आ घेरा और उन्हें कार्य छोड़ना पड़ा। 1903 ई० में वेबर ने इटली, होलैण्ड तथा बेल्जियम की यात्राएँ कीं। 1904 ई० में इनको एक पहले के साथी ने हारवर्ड में कला तथा विज्ञान की काँग्रेस के सम्मुख पेपर पढ़ने के लिए आमन्त्रित किया। उन्होंने वहाँ जर्मनी की सामाजिक व्यवस्था पर लेख पढ़ा। अपनी तीन महीने की अमेरिका यात्रा के समय वेबर अमेरिकी संस्कृति से काफी प्रभावित हुए तथा प्रोटेस्टैण्ट इथिक तथा पूँजीवाद का अध्ययन, नौकरशाही तथा अमेरिकी राजनीतिक संरचना में राष्ट्रपति की भूमिका इत्यादि पर उनके अध्ययन इसी प्रभाव का परिणाम हैं। प्रथम महायुद्ध के दौरान वे हाइडेलबर्ग के सैनिक अस्पतालों के संचालक (Director) रहे। 1918 ई० में ये वारसाई में 'जर्मन-युद्ध विश्रान्ति आयोग' और 'वेमर संविधान का मसौदा तैयार करने वाले आयोग' के सलाहकार भी नियुक्त हुए। इसी वर्ष उन्होंने 'वियना विश्वविद्यालय' (Viena University) तथा 'म्यूनिख विश्वविद्यालय' (Munich University) में क्रमश: विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में कार्य किया। 14 जून, 1920 ई० को उनका देहान्त हो गया।

वेबर के प्रमुख ग्रन्थ अथवा कृतियाँ

जर्मनी में समाजशास्त्र विषय को विकसित करने में वेबर ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन्होंने अनेक पुस्तकें एवं लेख लिखे, जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं—

(1) द प्रोटेस्टैण्ट इथिक एण्ड दि स्प्रिट ऑफ केपिटेलिज्म, 1905
(*The Protestant Ethic and the Spirit of Capitalism*, 1905)

(2) द रिलीजन ऑफ चाइना, 1916
(*The Religion of China*, 1916)

(3) द रिलीजन ऑफ इण्डिया, 1916
(*The Religion of India*, 1916)

(4) एनसियण्ट जुडाइज्म
(*Ancient Judaism*)

(5) इकोनोमी एण्ड सोसाइटी, 1927
(*Economy and Society*, 1927)

(6) ऐसेज इन सोशियोलोजी, 1946
(*Essays in Sociology,* 1946)

(7) द मैथेडोलोजी ऑफ सोशल साइंसज, 1949
(*The Methodology of Social Sciences*, 1949)

(8) द सोशियोलोजी ऑफ रिलीजन, 1963
(*The Sociology of Religion*, 1963)

(9) जनरल इकोनोमिक हिस्टरी, 1966
(*General Economic History*, 1966)

(10) द रैशनल एण्ड सोशल फाउण्डेशन्स ऑफ म्यूजिक, 1958
(*The Rational and Social Foundations of Music*, 1958)

मैक्स वेबर की सभी कृतियाँ जर्मन भाषा में लिखी हुई हैं तथा अधिकांश उपर्युक्त पुस्तकों के प्रकाशन के वर्ष इन पुस्तकों के अंग्रेजी अनुवादों के हैं। उनकी पुस्तकों के अनुवाद करने में **गर्थ** (Gerth), **मार्टिण्डेल** (Martindale), **टालकट पारसन्स** (Talcott Parsons), **मेरी इलफोर्डस्** (Mary llfords), **एडवर्ड शिल्स** (Edward Shils) तथा **हैनरी फिंच** (Henry Finch) इत्यादि विद्वानों ने विशेष योगदान दिया।

प्रोटेस्टैण्ट इथिक एण्ड दि स्प्रिट ऑफ केपिटेलिज्म
(PROTESTANT ETHIC AND THE SPIRIT OF CAPITALISM)

समाजशास्त्र का सम्बन्ध धार्मिक घटनाओं के सार के अध्ययन से नहीं है अपितु धर्म द्वारा प्रभावित व्यवहार के अध्ययन से है क्योंकि यह विशेष अनुभवों तथा विशिष्ट धारणाओं एवं लक्ष्यों पर आधारित है।

समाजशास्त्री को धार्मिक जीवन के अर्थपूर्ण व्यवहार का ही अध्ययन करना चाहिए। समाजशास्त्री को अपना ध्यान धार्मिक व्यवहार से उत्पन्न अन्य क्रियाओं (जैसे नैतिक, आर्थिक, राजनीतिक, कलात्मक इत्यादि) के प्रभाव पर केन्द्रित करना चाहिए तथा उन संघर्षों का पता लगाने का प्रयास करना चाहिए जो कि धार्मिक मूल्यों में विजातीयता के परिणामस्वरूप उत्पन्न होते हैं।

मैक्स वेबर की धर्म के अध्ययन में रुचि

वेबर के अनुसार धर्म का समाजशास्त्रीय अध्ययन एक प्रकार से आर्थिक, राजनीतिक तथा विशेष रूप से नैतिकता सम्बन्धी समाजशास्त्रीय अध्ययन भी है। यद्यपि वेबर ने अपना समाजशास्त्रीय जीवन अर्थशास्त्र के बारे में विचार व्यक्त करने से शुरू किया, फिर भी धर्म का समाजशास्त्र उनके अध्ययन का केन्द्र बिन्दु रहा है। वेबर ने प्रमुख रूप से धार्मिक व्यवहार का नैतिकता तथा आर्थिक घटनाओं पर प्रभाव का अध्ययन किया तथा राजनीति और शिक्षा पर प्रभाव पर भी अपने विचार व्यक्त किए। इनके अनुसार धार्मिक व जादू सम्बन्धी क्रिया सापेक्षिक रूप से तार्किक है क्योंकि यह अनुभवों के सामान्य नियमों पर आधारित है। इसलिए इन क्रियाओं को लक्ष्य निर्धारित क्रियाओं (Goal-oriented activities) की परिधि से बाहर रखना ठीक नहीं है। वेबर ने धर्म के समाजशास्त्र में दैवीय शक्ति की अवधारणा को केन्द्रीय बिन्दु माना है, यद्यपि कुछ धर्म (जादुई अथवा आत्मवादी) ईश्वर को नहीं मानते तथा 'आत्माओं' को महत्त्व देते हैं। उदाहरण के लिए—बौद्ध धर्म में ईश्वरीय शक्ति के विचार नहीं पाए जाते। धर्म के समाजशास्त्र के लिए जो बात महत्त्वपूर्ण है वह है प्राकृतिक शक्तियों के सम्बन्ध में व्यक्ति की धार्मिक क्रियाएँ अथवा व्यवहार। क्योंकि ये शक्तियाँ सामान्य अवलोकन क्षेत्र से बाहर हैं इसलिए इनके प्रतीकों को व्यक्ति की क्रियाएँ समझते समय सामने रखा जा सकता है।

वेबर का धर्म के समाजशास्त्र से सम्बन्धित सबसे प्रमुख अध्ययन प्रोटेस्टैण्ट इथिक एण्ड दि स्प्रिट ऑफ केपिटेलिज्म माना जाता है। पूँजीवाद के तत्त्व रोम, चीन तथा भारतीय समाजों में भी पाए जाते हैं परन्तु इन तत्त्वों से तार्किकता नहीं आई जो कि आधुनिक पूँजीवाद की विशेषता है। यह घटना (पूँजीवाद) केवल पश्चिमी देशों तक ही सीमित है। प्रश्न यह है कि आधुनिक पूँजीवाद केवल पश्चिमी देशों में ही क्यों विकसित हुआ, अन्य देशों में क्यों नहीं? इस प्रश्न के उत्तर में वेबर ने प्रोटेस्टैण्ट इथिक तथा पूँजीवाद की आत्मा का अध्ययन किया और इनमें कार्य-कारण सम्बन्धों की प्रामाणिकता को सिद्ध किया। प्रोटेस्टैण्ट इथिक जीवन की तार्किकता का एक आधार है जिसने पूँजीवाद की आत्मा को विकसित करने में सहायता दी है। फिर भी, यह पूँजीवाद का केवल मात्र तथा पर्याप्त कारण नहीं है। प्रोटेस्टैण्ट इथिक पूँजीवाद का एकमात्र कारण नहीं है अपितु विभिन्न कारणों में से एक कारण है जो पूँजीवाद के कुछ पहलुओं को विकसित करता है। कौन से विचार अथवा मूल्य पूँजीवाद की आत्मा को विकसित करते हैं? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए वेबर ने प्रोटेस्टैण्ट समूहों; जैसे केलविनिस्ट (Calvinist), प्रीटिस्ट (Pretist), मैथोडिस्ट (Methodist), बेपटिस्ट (Bapatist) इत्यादि का अध्ययन करके इनके आधारभूत उपदेशों तथा शिक्षाओं का पता लगाया।

पूँजीवाद एवं प्रोटेस्टैण्ट धर्म

यद्यपि मैक्स वेबर की यह मान्यता थी कि आर्थिक कारण मानव समाज में मौलिक कारण है, फिर भी वह इस बात से इनकार नहीं करते कि अन्य कारणों की समाज में कोई भूमिका ही नहीं है। वेबर ने आर्थिक कारणों के अतिरिक्त, मूल्यों की भूमिका की ओर भी काफी ध्यान दिया। वास्तव में, इनके अनुसार जितने अधिक कारकों को ध्यान में रखा जाए उतना ही अच्छा है। मार्क्स तथा वेबर के विचारों में आर्थिक कारणों को महत्त्वपूर्ण मानने की दृष्टि से मौलिक अन्तर नहीं पाया जाता।

पश्चिमी यूरोप में पूँजीवाद का विकास एक विशिष्ट अथवा अनुपम घटना है। मैक्स वेबर ने इस प्रश्न पर विचार करना शुरू किया कि पूँजीवाद का विकास केवल पश्चिमी समाजों में ही क्यों हुआ अन्य समाजों में क्यों नहीं, जबकि वहाँ की परिस्थितियाँ भी पश्चिमी देशों के समान ही थीं? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए वेबर ने विभिन्न समाजों की तुलना की तथा यह पाया कि यद्यपि परिस्थितियाँ कुछ गैर-पश्चिमी समाजों में भी ऐसी थीं कि पूँजीवाद विकसित हो सकता था, परन्तु वास्तव में नहीं हुआ क्योंकि उन समाजों तथा पश्चिमी समाजों के धार्मिक आचारों में भिन्नता थी। पश्चिमी देशों में धार्मिक आचार ऐसे हैं कि उनका आर्थिक जीवन पर भी काफी प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार, वेबर का यह अध्ययन तुलनात्मक विधि पर आधारित है।

वेबर के पूँजीवादी एवं प्रोटेस्टैण्ट धर्म के अध्ययन में समाजशास्त्र तथा इतिहास का संकलित रूप दिखाई देता है क्योंकि यह ऐतिहासिक घटना का समाजशास्त्रीय अध्ययन है। इस अध्ययन में भी वेबर आदर्श-प्ररूप की अवधारणा की सहायता लेते हैं तथा प्रोटेस्टैण्ट इथिक का आदर्श-प्ररूप बनाकर इसकी अन्य धर्मों से तुलना करके उनमें अन्तर देखने का प्रयास करते हैं।

प्रोटेस्टैण्ट ईसाई धर्म का एक मत है। 'इथिक' से अभिप्राय व्यवहार के आचार या नियम (Code of conduct) हैं, जबकि पूँजीवाद एक आर्थिक घटना है और 'स्प्रिट' से अभिप्राय अनिवार्य विशेषताएँ या मानसिक शक्ति (Essential features or mentality) है। वेबर का उद्देश्य प्रोटेस्टैण्ट धर्म के व्यवहार के नियमों तथा पूँजीवाद की मानसिक शक्ति में पाए जाने वाले पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन करना है। इसके लिए इन्होंने ईसाई धर्म का विस्तृत अध्ययन किया तथा इसकी तुलना संसार के अन्य प्रमुख धर्मों से की। इस तुलना से वेबर ने यह उपकल्पना बनाई कि पश्चिमी यूरोप में प्रोटेस्टैण्ट इथिक का पाया जाना पूँजीवाद की आत्मा का कारण है।

(अ) प्रोटेस्टैण्ट इथिक का आदर्श-प्ररूप

सर्वप्रथम वेबर प्रोटेस्टैण्ट इथिक का आदर्श-प्ररूप बनाते हैं जिससे वह यह जानने का प्रयास करते हैं कि इनमें कौन-कौन से व्यवहार नियम (आचार) हैं जिन्हें पूँजीवाद की आत्मा कहा जा सकता है। वेबर ने प्रोटेस्टैण्ट धर्म के आचारों का तथा इसके उपदेशकों, विशेषकर **बेन्जामिन फ्रैंकलिन,** की क्रियाओं के आधार पर यह सिद्ध कर दिया कि प्रोटेस्टैण्ट धर्म के दैनिक जीवन से सम्बन्धित व्यावहारिक आचार आधुनिक पूँजीवाद की आत्मा से मिलते हैं। इन उपदेशों में से कुछ उपदेश इस प्रकार हैं—भगवान की सेवा केवल वास्तविक जगत अर्थात् पृथ्वी पर ही की जा सकती है। किसी व्यक्ति की जीवन स्थिति कैसी भी क्यों न हो, उससे किसी कार्य की आशा क्यों न की जाती हो, वह जो विशेष कार्य कर रहा है उसे अपनी क्षमता के अनुसार ठीक प्रकार से करना चाहिए तभी वह भगवान की सेवा कर सकता है। इथिक का दूसरा पहलू यह है—अपने कार्य के परिणामस्वरूप व्यक्ति जो कमाता है उसे व्यर्थ अथवा फिजूल में ही खर्च नहीं करना चाहिए। इसके अतिरिक्त, प्रोटेस्टैण्ट इथिक अपने कार्य में ईमानदारी व उत्साही होने पर बल देता है। इसमें व्यवस्थित एवं युक्तिकरण जीवन को प्राथमिकता दी गई है। सत्यता तथा ईमानदारी से व्यक्ति जितना भी पैसा कमाता है वह पापरहित कार्य है। इसके अतिरिक्त दिन भर परिश्रम करना, मितव्ययिता एवं पैसों का बचाना भी दैवीय आदेश के अनुसार आवश्यक माना जाता है।

मैक्स वेबर के अनुसार प्रोटेस्टैण्ट इथिक में निर्धारित व्यवहार के इन आचारों के कुछ निश्चित आर्थिक परिणाम होते हैं। इथिक का एक पहलू वैराग्य (Asceticism) अर्थात् सरल जीवन व्यतीत करने का उपदेश देता है न कि फिजूलखर्ची से भरा जीवन व्यतीत करने का। ये आदेश एक ओर व्यक्ति को सरल जीवन व्यतीत करने को कहते हैं तो वहीं दूसरी ओर कड़ी मेहनत तथा ईमानदारी से काम करने पर बल देकर आर्थिक बचत पर भी बल देते हैं। इन्हें वेबर पूँजीवाद की आत्मा का प्रमुख आधार कहता है।

(ब) पूँजीवाद का आदर्श-प्ररूप

वेबर पूँजीवाद का भी आदर्श-प्ररूप बनाते है जो कि एक आर्थिक घटना है। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत उद्योग, व्यापार और वाणिज्य बड़े पैमाने पर संगठित एवं संचालित होते हैं तथा ये निजी क्षेत्र में पाए जाते हैं। उत्पादन में व्यावसायिक दृष्टिकोण, व्यापक उत्पादन तथा श्रम-विभाजन व विशेषीकरण, व्यावसायिक निष्ठा तथा व्यावसायिक कुशलता इत्यादि भी पूँजीवादी व्यवस्था की विशेषताएँ हैं तथा ये ही आधुनिक पूँजीवाद की आत्मा अथवा पूँजीवाद का आदर्श-प्ररूप हैं। जो व्यक्ति अपने कार्य व व्यवसाय में कुशल हैं वे धन और प्रतिष्ठा दोनों ही पाते हैं तथा जो अकुशल हैं तथा पुराने व्यवसायों में लगे हुए हैं उनका पतन जरूरी है।

वेबर पूँजीपतियों के व्यवहार की ओर भी ध्यान देते हैं तथा कहते हैं कि उनका व्यवहार विशेष प्रकार के आचारों द्वारा संचालित होता है। इस सम्बन्ध में वह बेन्जामिन फ्रैंकलिन द्वारा पूँजीपतियों तथा बड़े उद्योगपतियों के बच्चों को दिए गए उपदेशों का उल्लेख करता है जो प्रोटेस्टैण्ट विचारों द्वारा प्रभावित और उनके अनुरूप हैं। कुछ उपदेश इस प्रकार हैं—समय ही धन है, ईमानदारी सर्वोच्च नीति है, कार्य ही पूजा है, अपना कार्य ईमानदारी से करना ईश्वर की पूजा करना है। जल्दी सोना और उठना व्यक्ति को स्वस्थ, धनी और बुद्धिमान बनाता है। वेबर पूँजीपतियों तथा उद्योगपतियों के बच्चों को प्रोटेस्टैण्ट इथिक से सम्बन्धित इन उपदेशों की

तुलना दुनिया के अन्य धर्मों से करते हैं तथा इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि केवल प्रोटेस्टैण्ट धर्म ऐसा है जिसके आचार में दूरगामी आर्थिक परिणाम हैं। अन्य किसी धर्म के इतने अधिक एवं स्पष्ट आर्थिक परिणाम नहीं हैं।

प्रोटेस्टैण्ट इथिक की आदर्श-प्ररूप की तुलना अन्य धर्मों से करके तथा पूँजीवाद की आत्मा का आदर्श-प्ररूप बनाकर वेबर इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि प्रोटेस्टैण्ट धर्म के विचार आर्थिक विकास से जुड़े हैं तथा दोनों तरह के मूल्यों में काफी समानता है। इन दोनों में परस्पर सम्बन्ध पाया जाता है जिसे वेबर कार्य-कारण सम्बन्ध कहते हैं क्योंकि जहाँ पर प्रोटेस्टैण्ट इथिक पाया जाता है वहीं पूँजीवाद की आत्मा विकसित होती है। अपने तर्क की पुष्टि वह ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर करते हैं। इंग्लैण्ड, अमेरिका तथा होलैण्ड इत्यादि देशों में पूँजीवाद का सर्वोत्तम विकास हुआ क्योंकि इन देशों में अधिकांश व्यक्ति प्रोटेस्टैण्ट धर्म के ही अनुयायी हैं। दूसरी ओर, इटली तथा स्पेन इत्यादि देशों में पूँजीवाद अधिक विकसित नहीं हो सका क्योंकि वहाँ अधिकांश कैथोलिक धर्म के अनुयायी रहते हैं तथा कैथोलिक धर्म की मान्यताएँ प्रोटेस्टैण्ट धर्म की मान्यताओं से पूर्णत: भिन्न हैं। इतना ही नहीं, वेबर कुछ गैर-पश्चिमी देशों का भी अध्ययन करते हैं (जैसे भारत तथा चीन) जहाँ की परिस्थितियाँ ऐसी थीं कि वहाँ पूँजीवाद विकसित हो सकता था परन्तु यह विकसित नहीं हुआ क्योंकि इन देशों में भी भिन्न प्रकार का इथिक पाया जाता है जिसके आर्थिक परिणाम नहीं हैं।

अपने अध्ययन के आधार पर वेबर यह निष्कर्ष निकालते हैं कि प्रोटेस्टैण्ट इथिक तथा पूँजीवाद की आत्मा में कार्य-कारण सम्बन्ध है। प्रोटेस्टैण्ट इथिक पूर्वगामी (Antecedent) है जबकि पूँजीवाद की आत्मा इसका परिणाम (Consequence) है। ऐतिहासिक दृष्टि से भी प्रोटेस्टैण्ट इथिक का अस्तित्व पहले से है, जबकि पूँजीवाद की आत्मा का विकास बाद में हुआ। यद्यपि वेबर ने अनेक ऐसे प्रमाण दिए हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि प्रोटेस्टैण्ट इथिक ही आधुनिक पूँजीवाद के विकास का कारण है, फिर भी धर्म पूँजीवाद की उत्पत्ति और विकास का एकमात्र कारण नहीं है। इसे सबसे अधिक प्रभावशाली कारक कहा जा सकता है। केवल इसी दृष्टि से वेबर के विचार कार्ल मार्क्स से भिन्न माने जाते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि वेबर ने प्रोटेस्टैण्ट इथिक एण्ड दि स्प्रिट ऑफ केपिटेलिज्म के अपने अध्ययन में धर्म तथा पूँजीवाद के आदर्श-प्ररूप बनाकर यह सिद्ध कर दिया है कि ये आदर्श-प्ररूप तुलनात्मक अध्ययनों में सहायक हैं। वेबर यद्यपि प्रोटेस्टैण्ट इथिक को पूँजीवाद की आत्मा को अत्यधिक प्रभावित करने वाला कारक मानते हैं फिर भी इसे पूँजीवाद का एकमात्र कारक नहीं कहा जा सकता है क्योंकि अन्य देशों में; विशेषकर साम्यवादी देशों में भी उद्योग अत्यधिक विकसित हैं यद्यपि इन देशों की धार्मिक मान्यताएँ पूर्णत: भिन्न हैं। लेकिन वेबर यह कहते हैं कि धर्मों के आर्थिक आचारों के आधार पर ही उस समाज की आर्थिक तथा सामाजिक संरचना निर्धारित होती है। वह हिन्दू धर्म का विस्तृत अध्ययन करके बताते हैं कि हिन्दू धर्म में कर्म व पुनर्जन्म आदि के सिद्धान्त की प्रधानता है तथा भौतिक उन्नति प्राप्त करने की किसी प्रेरणा अथवा रुचियों का उपदेश इसमें नहीं दिया गया है अपितु केवल आध्यात्मिक उन्नति की प्रेरणा दी गई है। भारत में परम्परावाद ने आर्थिक विकास की गति रोकी है। भारत के आर्थिक और संस्थात्मक विकास ने एक ऐसी सांसारिक नीति को जन्म दिया जो संग्रहण की प्रवृत्ति को निम्न श्रेणी में रखती है। इसलिए यहाँ पूँजीवाद में सहायक दशाएँ विकसित नहीं हो पाईं।

यद्यपि वेबर ने पूँजीवाद के विकास में सहायक केवल एक पक्ष अर्थात् धर्म पर ही अपना ध्यान केन्द्रित किया है। फिर भी यह अध्ययन पूर्णत: वैज्ञानिक अध्ययन है। वास्तव में, वेबर की यही मान्यता थी कि सामाजिक विज्ञानों में किए जाने वाले अध्ययन एक-तरफा हैं क्योंकि सामाजिक वैज्ञानिक केवल उसी पक्ष की ओर अधिक ध्यान देता है जिसे वह महत्त्वपूर्ण मानता है। ●